

सामाजिक संस्थाओं का सिद्धान्त

- ✶ लॉक के अनुसार, राज्य व्यक्तियों के स्वार्थों द्वारा चलाया जाने वाला एक व्यवस्था है जो निम्नलिखित या जिससे व्यक्तियों को उत्तरदायक के द्वारा जिस निष्पक्षता के साथ प्राप्त किया।
- ✶ महाभारत के अन्तिम भाग में कौरवों की पुस्तक 'महाभारत' में इस सिद्धान्त का वर्णन मिलता है कि कौरवों की हार से पता चलता है कि मनुष्यों ने परस्पर सामंजस्य द्वारा राज्य की स्थापना की।
- ✶ बुनान में सॉफिस्टों ने सर्वप्रथम इस विचार का प्रतिपादन किया। इपिक्थोरिस विचारधारा वाले लोग तथा रोमन विचारक द्वारा भी इसका समर्थन किया गया।
- ✶ सर्वप्रथम रिचर्ड ह्यूकर ने वैज्ञानिक रूप में समाज की संरचना व्याख्या प्रस्तुत की।
- ✶ इस सिद्धान्त का वैज्ञानिक और विधिवत प्रतिपादन 'सोवियत विचारक' एडवर्ड होब्स तथा रुशो द्वारा किया गया है।
- ✶ होब्स ने सन 1651 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'लेवियथान' में सामंजस्य सिद्धान्त का प्रतिपादन कर निरंकुश राजतन्त्र का समर्थन किया।
- ✶ होब्स के अनुसार मनुष्य एक सामाजिक प्राणी नहीं है। वह एक स्वार्थी, अहंकारी तथा आत्मा-मिश्रणी प्राणी है। वह सर्वत्र अहित है ही प्रेम करता है और अहित प्राप्त करने का निरन्तर प्रयास करता रहता है।
- ✶ होब्स के अवयव में " प्राकृतिक अवस्था में न कोई व्यवसाय था, न कोई संस्कृति थी

कौन विद्या ली थी कौन कर्म निर्यात किया
 न थी और न कौन ब्रह्मण का न मानव
 जीवन मखल्य दिन जीवन विधान था
 मत्पक्कापक था।

प्रकृतिक मण्डल में अनुष्ठात जीवन लया
 उन्मुखी ब्रह्मण विद्या ली थी अनुष्ठात
 जीवन लया ब्रह्मण विद्या ली थी
 जीवन लया ब्रह्मण विद्या ली थी

ब्रह्मण का निर्यात किया
 होकर के अनुष्ठात ब्रह्मण विद्या ली थी
 के लिए लुमी ब्रह्मण विद्या ली थी
 किया। होकर के अनुष्ठात ब्रह्मण विद्या ली थी
 ब्रह्मण लया का ब्रह्मण विद्या ली थी
 ब्रह्मण लया का ब्रह्मण विद्या ली थी
 ब्रह्मण लया का ब्रह्मण विद्या ली थी
 ब्रह्मण लया का ब्रह्मण विद्या ली थी
 ब्रह्मण लया का ब्रह्मण विद्या ली थी
 ब्रह्मण लया का ब्रह्मण विद्या ली थी

प्र. (Honor)
 प्र. (Honor)
 प्र. (Honor)

Dr. Ram Kant Pandey
 S. R. P. Pandey
 Pandey